सामुदायिक अधिगम समूहों का जारी रहना ज़रूरी है

राघवेन्द्र बी टी

जैसा कई रिपोर्टों से हमें पता चला है, भारत में डिजिटल सेवाओं और संसाधनों के सामर्थ्य और पहुँच के लिए वह ज़रूरी आधार नहीं है जिसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर बच्चे को बाधारहित इंटरनेट सेवा के साथ स्मार्टफ़ोन/ डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए सीखने का समान अवसर मिले। कर्नाटक के सन्दर्भ में, शुरुआती समय में, जहाँ हो सका, शिक्षकों ने विद्यार्थियों को आभासी (virtual) कक्षाओं और व्हाट्सएप समूहों के ज़रिए जोड़ने का प्रयास किया। केवल प्राइवेट और पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले सुविधा-सम्पन्न परिवारों के बच्चे, जिनके पास इंटरनेट सेवाओं और स्मार्टफ़ोन की उपलब्धता थी, उनके शिक्षकों द्वारा संचालित की जा रही ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले सके। जीती-जागती कक्षाओं से हटकर ऑनलाइन ढंग से सीखने की तरफ़ हुआ परिवर्तन आसान नहीं था और ज़्यादातर जगह यह तरीक़ा आर्थिक रूप से वंचित वर्ग के बच्चों के लिए नामुमकिन था। हालाँकि अभिभावकों और शिक्षकों ने पूरी कोशिश की, लेकिन चन्द बच्चों की ही मदद की जा सकी।

शिक्षक इस विषय पर चिन्तित थे। होसपेट ब्लॉक (कर्नाटक) के एक प्रधान शिक्षक ने हमें बताया, 'कुछ दिन पहले, कक्षा पाँचवी का एक विद्यार्थी मेरे कार्यालय में था। वह राशन सामग्री लेने आया था। उसके सामग्री लेने के बाद, मैंने उसे रजिस्टर में दस्तख़त करने को बोला। लड़के ने कहा कि वह दस्तख़त करना भूल गया है और पूछा कि क्या वह उसके बदले अँगूठा लगा सकता है। मुझे हमारे तंत्र पर शर्म महसूस हुई। हमें बच्चों के साथ लगना पड़ेगा।'

विद्यागमा कार्यक्रम

शुरुआती समय में जब स्कूलों के फिर से खुलने पर अनिश्चितता बनी हुई थी, तब डिपार्टमेंट ऑफ़ पब्लिक इंस्ट्रक्शन (डीपीआई) ने निरन्तर शिक्षा का एक कार्यक्रम *विद्यागमा* के नाम से लाने का आदेश जारी किया। इस कार्यक्रम में शिक्षकों से कहा गया कि वे स्कूल को गाँवों में बच्चों के घरों तक ले जाएँ। शिक्षकों ने समुदायों में जाकर मन्दिर परिसरों, सामुदायिक भवनों व पेड़ों के नीचे कक्षाएँ लगाना शुरू कीं। कुछ महीने सफलतापूर्ण चलने के बाद, *कोविड-19* के बढ़ते मामलों की रिपोर्ट मिलने पर राज्य सरकार ने विद्यागमा कार्यक्रम बन्द कर दिया। शिक्षकों ने व्हाट्सएप के ज़रिए बच्चों को शिक्षा सामग्री भेजना जारी रखी और उन्हें डीडी चन्दना टीवी पर पाठों के देखने के लिए प्रेरित किया।

लेकिन कर्नाटक में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने विद्यागमा फिर से प्रारम्भ करने की माँग करनी शुरू की और चूँकि ज़्यादातर परिवार इंटरनेट सेवाएँ पाने में असमर्थ थे, इसलिए राज्य सरकार ने कार्यक्रम फिर से शुरू किया और शिक्षकों को *कोविड-19* के सभी प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन करते हुए बच्चों के साथ स्कूल परिसर में कक्षा लगाने के लिए कहा। डिजिटल और आमने–सामने बैठकर होने वाली पढ़ाई के मिश्रण से कुछ हद तक डिजिटल फ़ासले को पाटा लेकिन फिर इस कार्यक्रम को भी देश में आई *कोविड-19* की दूसरी लहर के कारण बन्द करना पड़ा।

सामुदायिक अधिगम समूहों का बनना

विद्यागमा के बन्द होने पर शिक्षकों ने फिर से आभासी कक्षाओं के ज़रिए विद्यार्थियों से जुड़ना शुरू किया। परन्तु बाक़ी भारत की तरह ही हमारे होसपेट ब्लॉक में भी कुछ ही अभिभावक स्मार्टफ़ोन/ टैबलेट व इंटरनेट सेवाओं की व्यवस्था कर पाने में समर्थ थे और इस पर किए जाने वाले ख़र्च की भी उनकी एक सीमा थी। ऑनलाइन कक्षाएँ और एक कारण से भी अभिभावकों के लिए तक़लीफ़ का विषय थीं — वे अपने बच्चों को घर पर अकेला छोड़कर काम पर नहीं जा सकते थे। इस स्थिति के समाधान के रूप में सामुदायिक अधिगम समूहों (सीएलजी) का विचार उभरा और इसे शिक्षकों व पदाधिकारियों के साथ साझा किया गया।

जनवरी 2021 में, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों में सीखने का नुक़सान हुआ है। हमने इस रिपोर्ट को साझा करने और साथ ही भाषा एवं गणित में हुए सीखने के नुक़सानों की भरपाई करने वाले दूसरे विकल्पों की पहचान करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया। फ़ाउण्डेशन की टीमों ने सीखने के कक्षावार प्रतिफलों व अपेक्षित क्षमताओं पर आधारित वर्कशीट बनाईं। इस समय तक, कर्नाटक सरकार ने भी यह सुझाव दे दिया कि शिक्षक विशिष्ट योजनाओं के साथ बच्चों से जुड़ें और इसमें सामुदायिक संगठनों, स्वयंसेवियों और अभिभावकों का सहयोग लें।

हमने ब्लॉक के शिक्षा विभाग पदाधिकारियों, प्रधान शिक्षकों और शिक्षकों के साथ कक्षाओं का आयोजन किया। उन्हें फ़ाउण्डेशन के अध्ययन के परिणामों से यह विश्वास हो गया कि ऑनलाइन कक्षाओं और विद्यागमा से भी विद्यार्थियों के सीखने पर सकारात्मक प्रभाव नहीं हुआ है। अध्ययन का निष्कर्ष था कि ऑनलाइन कक्षाओं में जो सिखाने की प्रक्रियाएँ इस्तेमाल की गईं, वे बच्चों के सीखने के तरीक़े में सहायक नहीं थीं, क्योंकि बच्चे दरअसल अपने साथियों और शिक्षकों के साथ मिलकर गतिविधियों में मानसिक व शारीरिक रूप से भाग लेते हुए सीखते हैं। इस बात ने शिक्षकों और विद्यालय विकास एवं प्रबन्धक समितियों (एसडीएमसी) को सीएलजी लगाने के लिए प्रेरित किया। इन सीएलजी में समुदाय के स्वयंसेवी, जो आदर्श स्थिति में उस स्कूल में पढ़े हुए उसी इलाक़े के पुराने विद्यार्थी हो सकते थे, अपने ख़ाली समय में शिक्षकों और फ़ाउण्डेशन के सदस्यों की मदद और सहयोग से इन बच्चों के साथ काम कर सकते थे।

जब हम यह प्रस्ताव शिक्षकों के पास ले गए, तब उनमें से ज़्यादातर ख़ुद से ही अपने विद्यार्थियों के साथ काम कर रहे थे क्योंकि नियमित स्कूल खुलने की कोई आशा न होने के हालात में बच्चों की सीखने की स्थिति और बिगड़ती जा रही थी।

इस समय तक, बच्चों ने बिना मास्क लगाए अपने दोस्तों के साथ बाहर जाना, मिलना शुरू कर दिया था और अपने हाथ साफ़ रखने के लिए साबुन/ सैनिटाइज़र का इस्तेमाल भी बन्द कर दिया था। उनके माता-पिता भी *कोविड-19* से डर कर बच्चों को इन सीएलजी में भेजने के लिए चिन्तित नहीं थे। बल्कि अधिकांश गाँवों में तो वे इसके प्रति उत्साहित थे। शिक्षकों ने भी इसके लिए स्वाभाविक रूप से प्रोत्साहित होने की वजह से अपने प्रयासों को बनाए रखा। इन कोशिशों के ज़रिए तमाम समस्याओं का निराकरण हुआ जैसे डिजिटल उपकरण और इंटरनेट सेवाएँ हासिल न कर पाना या उनकी उपलब्धता सुनिश्चित न कर पाना, किसी बड़े का अनिवार्य रूप से बच्चों के साथ होना और इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या।

ये समूह काम कैसे करते थे

हर स्कूल में विद्यार्थियों की कुल संख्या का ध्यान रखते हुए शिक्षकों ने आनुपातिक संख्या में, विद्यार्थियों के समुदाय से ही आने वाले स्वयंसेवी चुनने का फ़ैसला किया। इन स्वयंसेवियों के साथ 15-20 विद्यार्थियों की सूची साझा की गई, जिनके साथ उन्हें अपने ख़ाली समय में रोज़ 60 से 90 मिनट के लिए सीएलजी शुरू करनी थीं। इन स्वयंसेवियों को आवश्यक सहायता देने के लिए, शिक्षक हर सप्ताह हर सीएलजी में दो-तीन बार जाते थे।

शुरुआत में इन स्वयंसेवियों से कहा गया कि वे बच्चों को गाने, कहानी सुनाने, चित्र बनाने, चित्रकथाएँ /पिक्चर कार्ड देखने की गतिविधियों में शामिल करें ताकि वे और उनके विद्यार्थी, दोनों ही स्कूली शिक्षा में आई दरार से उपजी ज़रूरतों से वाक़िफ़ हो जाएँ। वर्कशीटों का एक सेट, जिस पर पहले एक कार्यशाला में चर्चा हुई थी, शिक्षकों को दिया गया और प्रधान शिक्षकों ने टीएलएम (शिक्षण अधिगम सामग्री), गणित की किट और अन्य संसाधन सभी स्वयंसेवियों को उपलब्ध कराए ताकि वे इनका इस्तेमाल बच्चों के साथ करते हुए उन्हें वाँछनीय क्षमताएँ पाने में मदद कर सकें।

हर हफ़्ते ये स्वयंसेवी स्कूल में इकट्ठे होकर बच्चों के साथ अगले हफ़्ते की जाने वाली अकादमिक गतिविधियों की योजनाएँ बनाते थे। साथ ही वे पिछले हफ़्ते किए गए अपने प्रयासों की समीक्षा करते थे और सामने आई चुनौतियों का निराकरण करने की कोशिश करते थे। इन प्रयासों ने डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट सेवाओं पर निर्भरता कम कर दी।

इस वैश्विक महामारी की परिस्थिति में, इन सीएलजी ने इच्छुक स्वयंसेवियों को अपने ख़ाली समय में, अनौपचारिक रूप से अपने ही इलाक़े के बच्चों का ध्यान रखने का मौक़ा दिया। अभिभावकों ने सीएलजी में अपने बच्चों की हाज़िरी सुनिश्चित कर और कक्षाओं के लिए जगह प्रदान कर इन स्वयंसेवियों का साथ दिया।

शिक्षकों को अपने पेशेवर और सामाजिक कर्तव्य निभाने का एक नया रास्ता मिला। वे सभी मुमकिन रणनीतियों को काम में लाकर बच्चों में हो रही सीख की कमी को कम करने की कोशिश कर रहे थे। हमने जिन शिक्षकों के साथ सम्पर्क कर उनका सहयोग किया, उनमें से अधिकांश का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चों के पास भाषा और गणित के बुनियादी कौशल हों जो मौजूदा कक्षाओं में अपना सफ़र जारी रखने में उनकी मदद करें और उन्हें पिछली कक्षाओं की सीखों की कमियों को न ढोना पड़े।

स्कूल फिर खुलने पर

हमारे वर्तमान प्रयासों का इरादा यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे सीखने की प्रक्रिया में लगातार लगे रहें और जब फिर से स्कूल खुलें, तब वे अपनी पढ़ाई, कक्षावार क्षमताएँ पाते हुए बिना किसी कठिनाई के जारी रख सकें। सामुदायिक स्वयंसेवियों व ग्राम पंचायत पुस्तकालय प्रभारी का सहयोग स्कूल खुलने के बाद भी मिलता रहेगा। चूँकि ज़्यादातर माता–पिता ख़ुद अपने बच्चों के पढ़ने–सीखने पर ध्यान देने व उन्हें सहयोग करने में सक्षम नहीं हैं, अतः सीएलजी स्वयंसेवी एक साझा योजना के ज़रिए अभिभावकों और बच्चों के साथ मिलकर काम करेंगे और शिक्षक, ग्राम पंचायत पुस्तकालय

प्रभारी व फ़ाउण्डेशन के सदस्य भी इस योजना का अहम हिस्सा रहेंगे। इन सभी के सामूहिक प्रयासों से और शिक्षण सहायक सामग्री (टीएलएम जैसे फ़्लैश कार्ड, कहानियाँ, चित्र, चार्ट पेपर, रंग, वर्कशीट, ऑडियो–विडियो क्लिप व नियम पुस्तिकाएँ) के ज़रिए उन बच्चों के साथ सार्थक व दिलचस्प गतिविधियाँ आयोजित की जा रहीं हैं, जो पिछले 18 माह या उससे ज़्यादा समय से स्कूल से दूर हैं। ये टीएलएम नियमित तौर से ग्राम पंचायत पुस्तकालय, सीएलजी और स्कूलों में इस्तेमाल की जा सकती हैं। चूँकि हमने पुस्तकालय अध्यक्षों (लाइब्रेरियन) से सम्पर्क कर उन्हें शिक्षकों की मदद से पुस्तकालय में बच्चों को संलग्न करने हेतु क्षमता वर्धन में शामिल किया, गाँवों में कुछ ग्राम पंचायत पुस्तकालयों में बहुत बदलाव आया है और वे बच्चों के ज़्यादा अनुकूल बन गए हैं।

हर बच्चे के सीखने के स्तर के आधार पर, शिक्षक हर बच्चे के साथ जुड़ने वाली प्रक्रियाएँ व गतिविधियाँ रचेंगे और स्वयंसेवियों व फ़ाउण्डेशन सदस्यों का सहयोग माँगेंगे ताकि बच्चों के सीखने में आई दरारों को पाटा जा सके और उन्हें उनकी मौजूदा कक्षा-स्तर की सीखने की अपेक्षाओं तक लाया जा सके। योजनाएँ बनाने और सामने आई चुनौतियों को पूरा करने के लिए साप्ताहिक समीक्षाएँ व बैठकें आयोजित की जाएँगी। चूँकि अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों का सहयोग नहीं कर सकते, अतः वे शिक्षकों व स्वयंसेवियों के सम्पर्क में रहेंगे ताकि उनके बच्चों के सीखने के स्तरों में सुधार हो सके।

हमने उपलब्धियों के साथ जुड़ी हुई वर्कशीटों के इस्तेमाल पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिनके ज़रिए शिक्षक और स्वयंसेवी, बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान को बढ़ावा देते हुए, वियोजित स्कूली शिक्षा से उभरी सीखने की कठिनाइयों को कम कर सकते हैं। *चन्दना* टी वी पर *सामवेद* टेली-कक्षाएँ और उनके बाद होने वाली चर्चाओं को देखने का मौक़ा देकर शिक्षक बच्चों का सहयोग करेंगे। जहाँ सम्भव होगा, दो स्कूलों के बीच अन्तर-विद्यालय वीडियो वार्तालापों का आयोजन किया जाएगा। इससे दोनों ही स्कूलों के बच्चे उनके द्वारा पढ़ी-देखी गई कहानियों, चित्रों और कविताओं पर परस्पर बात कर पाएँगे।

हमने ठान लिया है कि होसपेट ब्लॉक में कोई भी बच्चा, शिक्षण-अधिगम प्रकिया को अंजाम देने वाले तंत्र की कमी की वजह से वंचित नहीं रहेगा। उन्हें अपनी उम्र और कक्षा के अनुरूप कौशलों को फिर से हासिल करने के वही अवसर दिए जाएँगे जो उनके इलाक़े के किन्हीं सुविधा-सम्पन्न बच्चों को मिलेंगे।

राघवेन्द्र बी टी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से 2016 में फ़ेलो के तौर पर जुड़े। आजकल वे कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के होसपेट, बेल्लारी स्थित ज़िला संस्थान में प्रारम्भिक भाषा, प्रारम्भिक गणित एवं अँग्रेज़ी के स्रोत व्यक्ति हैं। इससे पहले, वे एक निजी प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेज में पढ़ाते थे। उनसे raghavendra.bt@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** मनिका कुकरेजा